



माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

वर्ष-2017

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
अग्रशास्त्र	1 4 0	हिन्दी

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		2
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक

0402576

अंकों में

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

— 2 7 3 5 2 7 5 1 5

शब्दों में

— दो सात तीन पाँच दो सात पाँच एक पाँच

एक एक दो चार तीन नौ पाँच छः आठ

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क - पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में शब्दों में

ख - परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक

ग - परीक्षा का दिनांक

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर *R.P. Shukla*

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर *351004*

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा *M.T. QURESHI LECTURER GOVT. EXCELLENCE H.S.S. DAMOH*

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा *R.S. THAKUR Varishan Sahyansak Govt. Excl. H.S.S. Damoh*

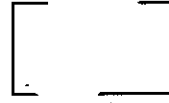
कल शब्दों में

अंकों में

2



+



=



योग पृष्ठ

पृष्ठ के अंक

कुल अंक



क्र. प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-1

(1) (क) सामूहिक इकाईयों से ।

(2) (स) अति अल्पकालीन मूल्य ।

(3) (अ) प्रो. जे. वी. सेने ।

(4) (अ) संतुलित ।

(5) (ब) ~~सं~~ अप्रत्यक्ष कर ।

प्रश्नोत्तर क्र.-2

(1) ~~प्र~~ प्रातिस्थापन ।

(2) ~~सं~~ संकुचित ।

(3) ~~सं~~ रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ।

(4) ~~सं~~ आर्थिक स्थिरता और नियंत्रण ।

(5) ~~सं~~ रेलमंत्री ।

3

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

या. पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 3 अंक कुल



प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.- 3

(i) सत्य ।

(ii) असत्य ।

(iii) असत्य ।

(iv) सत्य ।

(v) असत्य ।

प्रश्नोत्तर क्र.- 4

(i) बैलौचदार ।

(ii) उपयोगिता ह्रास नियम ।

(iii) प्रो० कीन्स ।

(iv) $MR = MC$ ।

(v) निर्देशांक ।

4

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

दायाँ पूर्व पृष्ठ

+

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

पृष्ठ 4 के अंक

$$= \boxed{\quad}$$

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-5

(i) सन् 1935 में।

(ii) एक वर्ष।

(iii) सार्वजनिक कल्याण से।

(iv) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (केन्द्रीय बैंक)

(v) $\sqrt{\frac{4v^2}{N}}$

B
S
E

प्रश्नोत्तर क्र.-6

माँग की लौच का अर्थ :-

माँग और कीमत में विपरीत संबंध होता है। माँग की लौच का आशय है कि वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने से माँग में किस दर से परिवर्तन होगा।

5

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{20}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 5 के अंक कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-7 (अथवा)

सकल घरेलू उत्पाद (Gross domestic Production): —

किसी देश की सीमा के अंदर एक वर्ष में उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है।

प्रश्नोत्तर क्र.-8

प्रभावपूर्ण माँग: —

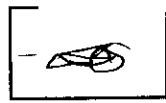
प्रभावपूर्ण माँग से आशय रोजगार निर्धारण के उस बिंदु से होता है जहाँ पर समग्र माँग एवं समग्र पूर्ति आपस में बराबर होते हैं और एक-दूसरे को उसी बिंदु पर काटते (प्रतिच्छेदित) करते हैं।

प्रश्नोत्तर क्र.-9 (अथवा)

मुद्रास्फीति (Inflation) का अर्थ: —

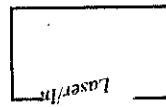
मुद्रास्फीति का आशय मुद्रा अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मात्रा का प्रसार होना है तथा जिसके फलस्वरूप मुद्रा का मूल्य गिरता है और कीमतों में अधिकाधिक वृद्धि होने लगती है। इसका अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

6



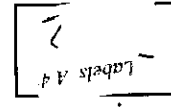
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 6 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.- 10 (अथवा)

विस्तार का अर्थ (meaning of Range) :-

विस्तार का आशय किसी समूह श्रेणी में उपस्थित सबसे बड़े पद मूल्य और सबसे छोटे पद-मूल्य के अंतर से होता है।

प्रश्नोत्तर क्र.- 11

माँग को निर्धारित करने वाले तीन तत्व निम्नलिखित हैं :-

(1) वस्तु की कीमत :-

किसी वस्तु की कीमत माँग को निर्धारित करती है। वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर माँग में कमी हो जाती है तथा वस्तु की कीमत घटने पर माँग में वृद्धि हो जाती है।

(2) उपभोक्ता की आय :-

किसी वस्तु की माँग उपभोक्ता की आय पर भी निर्भर करती है। कीमतों में परिवर्तन न होने पर यदि उपभोक्ता की आय में वृद्धि होती है तो माँग में वृद्धि हो जाती है तथा आय कम होने पर माँग घट जाती है।

7

1
-ST-24 64

योग पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 7 के अंक

=

72
कुल अंक



प्रश्न क्र.

(3) धन और आय का वितरण :-

धन और आय का समान वितरण होने पर भाँग की प्रवृत्ति समान घनी रहती है अन्यथा असमान वितरण से पूँजी का केन्द्रीकरण होता है, जिससे भाँग प्रभावित होती है।

X 34 mm X

प्रश्नोत्तर क्र. - 42

माँग तथा आवश्यकता में तीन अंतर निम्नलिखित हैं :-

B
S
E

	माँग (Demand)	आवश्यकता (wants)
1.	माँग में वस्तु की इच्छा, साधन तथा तत्परता के साथ निश्चित कीमत तथा निश्चित समय का होना आवश्यक है।	आवश्यकता में वस्तु की इच्छा, साधन तथा तत्परता केवल तीन महत्वपूर्ण तत्व होते हैं।
2.	माँग एक निश्चित समय अवधि में उत्पन्न एवं पूर्ण होती है।	आवश्यकता अपेक्षाकृत कम समय अवधि में उत्पन्न एवं पूर्ण होती है।
3.	माँग आवश्यकता पर निर्भर होती है।	आवश्यकता माँग का परिणाम होती है।

24

8

योग पूर्व पृष्ठ

+

desmot
पृष्ठ 8 के अंक

= कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-13

प्रमाप विचलन का कोई एक सूत्र :-

$$= \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N}}$$

यहाँ पर,

- \sum = योग का संकेत ।
- f = आवृत्ति ।
- d^2 = विचलनों का वर्ग ।
- N = आवृत्ति का योग । (कुल संख्या) ।

B
S
E

प्रश्नोत्तर क्र.-14 (अथवा)

सह-संबंध का कोई एक सूत्र निम्नलिखित है :-

स्पियरमैन की अंतर कोटे विधि से सहसंबंध का सूत्र :-

$$r = 1 - \frac{6\sum D^2}{N(N^2 - 1)}$$

यहाँ पर,

- r = सह-संबंध का सूचक ।
- D^2 = विचलनों का वर्ग ।
- N = संख्या । (आवृत्ति का योग) ।
- N^2 = संख्याओं का वर्ग ।

9



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 9 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र. - 15

व्याप्ति और समाप्ति अर्थशास्त्र में चार अंतर निम्नलिखित हैं :-

क्र.	व्याप्ति अर्थशास्त्र	समाप्ति अर्थशास्त्र
1.	व्याप्ति अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। जैसे- विशिष्ट फर्म, विशिष्ट परिवार इत्यादि।	समाप्ति अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। जैसे- राष्ट्रीय आय, मौद्रिक नीति इत्यादि।
2.	व्याप्ति अर्थशास्त्र योग को ढुंकड़ी में तोड़ने की क्रिया है।	समाप्ति अर्थशास्त्र योग को जोड़ने की आधार क्रिया है।
3.	व्याप्ति अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के दोटे भागों का अध्ययन किया जाता है।	समाप्ति अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन व्यापक दृष्टिकोण से किया जाता है।
4.	व्याप्ति अर्थशास्त्र व्यक्तिगत संस्थाओं की नीतियों के निमण में मदद करते हैं।	समाप्ति अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए नीतियों का निमण करती है।

B
S
E

10



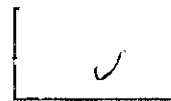
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 10 के अंक

=



कुल अंक

57-



प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र. - 16

पूर्ण प्रतियोगिता के बाजार की कोई न्यार विशेषताएँ निम्नालिखित हैं :-

(1) विक्रेताओं की अधिक संख्या :-

पूर्ण प्रतियोगिता में विक्रेताओं की अधिक संख्या विद्यमान होती है उसका प्रमुख कारण यह है कि प्रत्येक विक्रेता के पास वस्तु की छोटी मात्रा उपलब्ध होती है।

(2) क्रेता के बाजार का पूर्ण ज्ञान :-

पूर्ण प्रतियोगिता में क्रेता बाजार का मूल्य और चलन से ज्ञानता है उसी कारण वस्तु की कीमत में स्थिरता बनी होती है।

(3) यातायात लागत का पूर्ण अभाव :-

पूर्ण प्रतियोगिता में क्रेता और विक्रेता एक ही स्थान पर होते हैं। अतः इसमें यातायात की लागत नहीं लगती है।

(4) एकरूप वस्तु :-

पूर्ण प्रतियोगिता में सभी विक्रेताओं के समीप एक समान वस्तु होती है, जो रूप, रंग, गुण और आकार में समान होती है। इसमें वस्तुओं में विभेद नहीं पाया जाता है।

B
S
E



प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-17

मुद्रा के चार महत्व निम्नलिखित हैं :-

(1) उपभोक्ता को लाभ :-

मुद्रा से उपभोक्ता को लाभ प्राप्त होता है। उपभोक्ता की आवश्यकता असीमित है किंतु साधन सीमित है अतः वह अपनी मुद्रा को इस प्रकार व्यय करना चाहता है जिससे सभी वस्तुओं से उसे समान संतुष्टि प्राप्त हो अर्थात् सभी की सीमांत उपयोगिता समान हो। यह कार्य मुद्रा द्वारा होता है।

(2) उत्पादक को लाभ :-

किसी उद्योग में उत्पादक को यह निर्णय लेना पड़ता है कि उत्पादन कितनी मात्रा में हो, उसकी उत्पादन लागत कितनी होगी इत्यादि। उत्पादक इनका निर्धारण मुद्रा की सहायता से 'कीमत-संकेत' द्वारा सुनिश्चित करता है।

(3) क्षम विभाजन में सहायक :-

मुद्रा का प्रयोग क्षम-विभाजन में किया जाता है। एक उत्पादन में कई उप-उत्पादन क्रिया होती हैं जैसे- भूमि, क्षम, पूंजी इत्यादि इनका निर्धारण मुद्रा के माध्यम से ही किया जाता है।

(4) स्कता वृद्धि में सहायक :-

मुद्रा स्कता वृद्धि में सहायक है क्योंकि एक देश में एक ही मुद्रा प्रणाली

(12)

$$\begin{array}{|c|} \hline 56 \\ \hline 57 \\ \hline \end{array}$$

योग पूर्व पृष्ठ

+

$$\begin{array}{|c|} \hline 5 \\ \hline \end{array}$$

पृष्ठ 12 के अंक

=

$$\begin{array}{|c|} \hline 61 \\ \hline 57 \\ \hline \end{array}$$

कुल अंक



प्रश्न क्र.

का प्रयोग किया जाता है जिससे पारस्परिक निर्भरता बढ़ती है और व्यापार और उद्योगों का विकास होता है।

प्रश्नोत्तर क्र. - 18

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के चार लाभ निम्न लिखित हैं:-

(1) प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग:-

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से पूर्ण प्रतियोगिता बढ़ जाती है तथा लोग उपयोग की प्रवृत्ति को बढ़ा देते हैं जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है तथा देश के प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग होने लगता है।

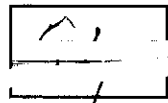
(2) एकाधिकार की प्रवृत्ति पर रोक:-

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में किसी वस्तु के उत्पादन में एकाधिकार की प्रवृत्ति पर रोक लगा जाती है। सभी फर्म किसी भी वस्तु का उत्पादन करने और उसे विक्रय करने के लिए स्वतंत्र होती हैं।

(3) संकटकाल में सहायता:-

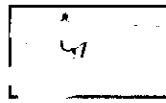
अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से विभिन्न देश एक-दूसरे की संकटकाल जैसे बाढ़, अकाल, सूखा इत्यादि में आवश्यक वस्तुओं और सामानों

13



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 13 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

की आपूर्ति करते हैं।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में वृद्धि :-

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से पारस्परिक

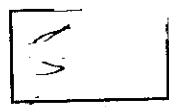
- 1/ निर्भरता बढ़ती है। संस्कृति, आचार-विचार का आदान-प्रदान होता है तथा इससे सहयोग की भावना प्रबल होती है।

प्रश्नोत्तर क्र. - 49

प्रत्यक्ष कर एवं अप्रत्यक्ष कर में चार अंतर निम्नलिखित हैं :-

क्र.	प्रत्यक्ष कर	अप्रत्यक्ष कर
1.	प्रत्यक्ष कर का कराघात एवं करापात एक ही व्यक्ति पर पड़ता है उसे प्रत्यक्ष कर कहते हैं।	अप्रत्यक्ष कर का कराघात एवं करापात अलग-अलग व्यक्तियों पर पड़ता है, उसे अप्रत्यक्ष कर कहते हैं।
2.	प्रत्यक्ष कर में निश्चितता का गुण पाया जाता है।	अप्रत्यक्ष कर में निश्चितता का गुण नहीं पाया जाता है।
3.	प्रत्यक्ष कर में मितव्ययिता पाई जाती है।	इसमें मितव्ययिता का गुण नहीं पाया जाता है।

14



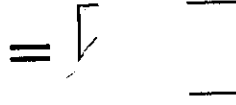
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृ.

अंक



उत्तर जर्क



MADHYA PRADESH BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

<p>4. प्रत्यक्ष कर नागरिकों में चैतन्यता जागृत करने में समर्थ होते हैं।</p>	<p>अप्रत्यक्ष कर में नागरिकों में चैतन्यता का अभाव पाया जाता है।</p>
---	--

प्रश्नोत्तर क्र-20 (अथवा)

विस्तार के दो गुण तथा दो दोष निम्नलिखित हैं:-

B
S
E

गुण (Merits): —

- (i) विस्तार (Range) को समझना व गणना करना सरल है।
- (ii) विस्तार में दो पद मूल्यों के बीच सभी समंके बिन्दु लेते हैं। यह उनकी स्पष्ट व्याख्या करता है।

दोष (Demerits): —

- (i) विस्तार अपकेंद्रण की एक अनिश्चित माप है।
- (ii) इसमें केवल अधिकतम और न्यूनतम मूल्यों पर ही ध्यान दिया गया है।

15

$$\boxed{6} + \boxed{10} = \boxed{16}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 10 अंक कुल अंक



प्रश्नोत्तर क्र. - 21

(1) धनात्मक और ऋणात्मक सह-संबंध :-

धनात्मक सह-संबंध से आशय उन दो चरों में समान दिशा में परिवर्तन होने से है। यदि एक चर में परिवर्तन अथवा वृद्धि या कमी दूसरे चर में वृद्धि या कमी करती है अथवा दोनों में समान दिशा में परिवर्तन होता है तो उसे धनात्मक सह-संबंध कहते हैं।

ऋणात्मक सह-संबंध से आशय है कि यदि एक चर में वृद्धि या कमी दूसरे चर में कमी या वृद्धि कर देती है तो उसे ऋणात्मक सह-संबंध कहते हैं। इसमें विपरीत दिशा में परिवर्तन होते हैं।

(2) रेखीय एवं अरेखीय सह-संबंध :-

रेखीय सह-संबंध से आशय दो चरों में होने वाले समान आनुपातिक परिवर्तन से है। दोनों चरों में समान रूप से अनुपात में परिवर्तन होने चाहिए।

अरेखीय सह-संबंध से आशय दो चरों में होने वाले असमान आनुपातिक परिवर्तन से होता है।



प्रश्नोत्तर क्र. - 22 (अथवा)

लागत वक्र के 'U' आकृति के होने के पाँच कारण निम्न लिखित हैं :-

(1) सम संबंधी बचते :-

लागत वक्र के 'U' आकृति के होने का एक कारण सम संबंधी बचते हैं। जब उत्पादन में वृद्धि होती है तो फलस्वरूप सम में भी वृद्धि होती है जिसके कारण उनका विशिष्टीकरण संभव हो जाता है और उत्पादन लागत कम लगने लगती है।

(2) प्रबंधकीय बचते :-

उत्पादन बढ़ने पर प्रबंध पर व्यय होने वाला खर्च बच जाता है क्योंकि एक कुशल प्रबंधक प्रबंध की व्यवस्था ठीक उसी प्रकार से करता है जैसा उसने पूर्व में कुशल प्रबंध किया था।

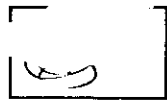
(3) तकनीकी बचते :-

उत्पादन के साधनों में तकनीकी परिवर्तन जैसे - बड़े मशीनों और औजारों का प्रयोग कर तकनीकी व संबंधी बचते की जाती है। इनके माध्यम से उत्पादन लागत में कमी होने लगती है और बचत प्राप्त होती है।

(4) विपणन संबंधी बचते :-

जब उत्पादन में वृद्धि होती है तो विपणन के लिए बार-बार विज्ञापन की आवश्यक-

17



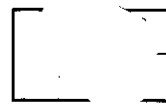
योग-पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 17 के अंक

=



कुल अंक



MADHYAPRADESH BOARD OF SECONDARY EDUCATION

न क्र.

कहा नहीं होती है। एक बार विज्ञापन हो जाने पर उसकी बचतें प्राप्त होने लगती हैं।

प्रश्नोत्तर क्र.-२३

राष्ट्रीय आय लेखांकन के महत्व की विवेचना :-

(1) आर्थिक प्रगति की जानकारी :-

राष्ट्रीय आय लेखांकन न केवल राष्ट्रीय आय अपितु बचत, निवेश, विनियोग की भी जानकारी प्रदान करता है। इसकी सहायता से सरकार आर्थिक नीतियों का निर्माण करती है।

(2) भ्रम खंडों के लिए महत्व :-

राष्ट्रीय आय लेखांकन से भ्रमियों की यह ख्यात होता है कि राष्ट्रीय आय में उनका कितना योगदान है तथा उन्हें कितना प्राप्त होता है।

(3) आर्थिक नीतियों के निर्माण में सहायक :-

राष्ट्रीय आय लेखांकन राष्ट्रीय आय में वृद्धि और कमी को दर्शाकर सरकार की आर्थिक नीतियों के निर्माण में मदद करती है साथ ही प्राकृतिक संसाधनों के उचित बँटवारा करने में सहयोग देती है।

B
S
E

MADHYAPRADESH BOARD OF SECONDARY EDUCATION

$$\boxed{\text{—}} + \boxed{\text{—}} = \boxed{\text{—}}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 18 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

(4) आर्थिक विकास में सहायक: —

राष्ट्रीय आय लेखांकन वचन, विनियोग, निवेश को प्रदर्शित करती है। इसके माध्यम से किसी देश के जीवन स्तर का पता चलता है। यह आर्थिक विकास का सूचक होती है।

(5) व्यापार में सहायक: —

राष्ट्रीय आय लेखांकन से यह ज्ञात होता है कि कर्म में उद्योगी की तथा उत्पादन की स्थिति क्या है। इससे प्रेरित होकर ही सरकार औद्योगिक नीतियों का निर्माण करती है।

प्रश्नोत्तर क्र. - 24 (अथवा)

कीन्स के रोजगार सिद्धांत की आलोचनाएँ निम्नलिखित हैं:

(i) एकपक्षीय सिद्धांत: —

कीन्स का रोजगार सिद्धांत में समग्र माँग को महत्वपूर्ण मानकर समग्र पूर्ति की उपेक्षा की गई है। समग्र पूर्ति को इन्होंने स्थिर माना है जबकि ऐसा सँभव नहीं है।

(ii) सामान्य सिद्धांत नहीं: —

कीन्स का रोजगार सिद्धांत सामान्य सिद्धांत नहीं है। यह विकसित देशों में प्रजीवाही अर्थव्यवस्था का संतुलन करता है न कि

19

$$\boxed{5} + \boxed{1} = \boxed{6}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ अंक कुल अंक



विकासशील देशों का, जहाँ अर्थव्यवस्था निम्न है।

(iii) अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित: —

केन्स का रोजगार सिद्धांत पूर्ण प्रतियोगिता तथा बंद अर्थव्यवस्था जैसे अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है जो कि आधुनिक जगत में कहीं देखने को नहीं मिलती है।

(iv) अल्पकालीन सिद्धांत: —

केन्स का रोजगार सिद्धांत अल्पकालीन है। अतः अल्पकाल में समग्र मांग में परिवर्तन का उचित मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। अतः विद्वानों ने इसे गलत कहा है।

(v) उपभोग की अत्यधिक महत्व: —

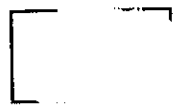
केन्स ने उपभोग की प्रवृत्ति को अत्यधिक महत्व दिया है तथा प्रभावपूर्ण मांग की व्याख्या की है। उपभोग का समग्र मांग में प्रभाव अल्पकाल में केन्स ने उचित रूप से स्पष्ट नहीं किया है।

20



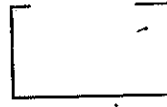
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 20 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र.-25

एक अच्छी कर प्रणाली की पाँच विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

(1) कररीपण के नियम के अनुकूल :-

एक अच्छी कर प्रणाली कर-देय योग्यता सिद्धांत के अनुकूल होना चाहिए अर्थात् उसे कररीपण के नियम जैसे-समानता, सुविधा, उत्पादकता इत्यादि के नियम के अनुसार होना चाहिए तथा उसमें यह गुण समाहित होने चाहिए।

(2) लोचता :-

एक अच्छी कर प्रणाली में लोचता का गुण पाया जाना चाहिए ताकि उसे संकटकाल तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बदला जा सके।

(3) विभिन्नता :-

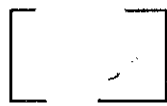
कर प्रणाली किसी एक कर जैसे-प्रगतिशील, आनुपातिक, प्रतिगामी न होकर इनका मिश्रित रूप होना चाहिए जो विभिन्न दशाओं में विभिन्न तरीकों से कार्य कर सके।

(4) अधिकतम सामाजिक लाभ :-

एक अच्छी कर प्रणाली में अधिकतम समाज के कल्याण और लाभ की भावना निहित होनी चाहिए। सड़क, भवन, रेल परिवहन इत्यादि

B
S
E

21



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 21 के अंक

=



कुल अंक



की सुविधा जनता के लिए करना उद्देश्य होना चाहिए।

(5) न्यूनतम सामाजिक त्याग :-

एक अच्छी तरह प्रणाली में जनता द्वारा कम-से-कम मुद्रा के रूप में त्याग करना आवश्यक होना चाहिए तथा सभी का समान त्याग होना अनिवार्य होना चाहिए तथा यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि गरीब वर्ग पर इसका कम प्रभाव पड़े।

प्रश्नोत्तर क्र. - 26 (अथवा)

सह-संबंध का आशय :-

सह संबंध से आशय दो चरों के पारस्परिक निर्भरता से है। यह बताता है कि एक चर में परिवर्तन का दूसरे चर पर किस दर से प्रभाव पड़ेगा।

प्रो किंग के अनुसार - "समस्त श्रेणियों और समूहों के मध्य कार्यकरण ही सह-संबंध है।"

सह-संबंध का महत्व निम्नलिखित है :-

(1) दो चरों के संबंधों को जानना :-

सह-संबंध दो चरों के संबंधों को स्पष्ट करता है। यह बताता है कि

(22)

$$\begin{array}{|c|} \hline 2 \\ \hline \end{array} + \begin{array}{|c|} \hline 2 \\ \hline \end{array} = \begin{array}{|c|} \hline 4 \\ \hline \end{array}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 2 4 बु. 1. जफ



प्रश्न क्र.

इन्में धनात्मक सह-संबंध है अथवा ऋणात्मक। साथ ही रेखीय-अरेखीय, सरल और आंशिक सह-संबंध को प्रदर्शित व्यक्त करता है।

(ii) एक चर के माध्यम से दूसरे चर का अनुमान लगाना।

सह-संबंध दो चरों में एक चर के गणितीय मूल्यों से दूसरे चर का गणितीय मूल्य अनुमानित ढंग से व्यक्त करता है। इससे यह ज्ञात किया जाता है कि एक चर में परिवर्तन का दूसरे चर में परिवर्तन किस प्रकार होगा।

(iii) आर्थिक नीतियों के निर्माण में सहायक :-

सह-संबंध अर्थव्यवस्था में माँग और पूर्ति इत्यादि के मूल्यांकन में सहायक है। अतः इसकी सहायता से सरकार आर्थिक नीतियों का निर्माण कर माँग और पूर्ति में समन्वय स्थापित करती है।

(iv) अभौतिक वस्तुओं का मापन :-

सह-संबंध की सहायता से सुंदरता, बुद्धिमत्ता जैसे तथ्यों का भी आंकलन किया जा सकता है। यह स्पीयरमैन की अन्तर कोटि विधि द्वारा ज्ञात किया जाता है।

(v) अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण कारक :-

सह-संबंध अर्थव्यवस्था में माँग एवं पूर्ति जैसी अनेक समस्याओं का हल निकालती है तथा इसे स्थिरता प्रदान करती है अतः अर्थव्यवस्था में यह

(23)

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 23 के अंक कुल अंक



प्रश्न क्र.

एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में विद्यमान है।

B
S
E

MADHYAPRADESH BOARD OF SECONDARY EDUCATION